UNIVERSITY NEWS 14 OCTOBER 2025

AMAR UJALA PAGE NO 7

बेहतर स्वास्थ्य के लिए संतुलित जीवनशैली जरूरी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग में सोमवार को मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों में भावनात्मक स्वास्थ्य को लेकर संवाद बढ़ाना था। कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने कहा कि विश्वविद्यालय एक ऐसा वातावरण तैयार करने को प्रतिबद्ध है, जहां हर छात्र मानसिक रूप से सशक्त महसूस करे। फिल्म निर्माता और मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता इकबाल रिजवी और नर्चरलाइफ की संस्थापक फराह सरोश ने संतुलित जीवनशैली पर जोर दिया। (माई सिटी रिपोर्टर)

सामाजिक परिवर्तन का भी आधार है भाषा

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग और डॉ. राम मनोहर लोहिया शोधपीठ की ओर से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का रविवार को समापन हो गया। दक्षिण एशिया की विविधता, भाषा व संस्कृति को समर्पित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आईआईटी जोधपुर के डॉ. तोनिशा गुडन रहीं। उन्होंने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक विभाजन और परिवर्तन का भी आधार बनती है। जीबी पंत संस्थान के डॉ. कामेई सैमसन, शिव नादर विश्वविद्यालय के डॉ. पीसी सैदलवी ने विचार रखे। समापन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सतीश देशपांडे ने वैश्विक भाषाओं के प्रभुत्व और स्थानीय भाषाओं की पुनर्जीवित होती भूमिका पर बात रखी। (माई सिटी रिपोर्टर)

HINDUSTAN PAGE NO 12

एलयू: प्रोफेसर मीना बनीं गणित की विभागाध्यक्ष

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में गणित एवं खगोलशास्त्र विभाग के नए विभागाध्यक्ष के तौर पर प्रोफेसर मीना सहाय को नियुक्त किया गया है। कुलसचिव ने आदेश जारी करते हुए बताया कि कुलपति के निर्देश पर प्रोफेसर मीना को तीन वर्ष की अवधि, अधिवर्षता आयु प्राप्ति या अन्य कोई आदेश होने तक विभागाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है।

एलयू में मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूक किया

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन सभागार में प्राणीशास्त्र विभाग की ओर से मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम हुआ। कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने सहायक शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए एलयू की प्रतिबद्धता पर बात की। विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. शीला मिश्रा और मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. अर्चना शुक्ला ने मानसिक स्वास्थ्य के वैज्ञानिक और संस्थागत नजरिए पर अपना पक्ष रखा। बॉलीवुड फिल्म निर्माता इकबाल रिजवी ने भी भाषण दिया।

DAINIK JAGRAN PAGE NO 19

लवि में बन रही नवग्रह वाटिका, पौधों से जानेंगे ग्रहों का संबंध

वनस्पति विज्ञान विभाग के परिसर में तैयार की गई नवग्रह वाटिका • सौ. विभाग

अखिल सक्सेना • जागरण

लखनऊः लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग परिसर में एक नवग्रह वाटिका तैयार की जा रही है, जहां लोगों को यह जानकारी मिलेगी कि किस ग्रह के लिए कौन सा पौधा शुभ माना जाता है। पूजा में किस ग्रह को शांत करने के लिए कौन से पौधे की लकड़ी या पत्तों का प्रयोग किया जाता है। यह अनोखी पहल भारतीय परंपरा और वनस्पति विज्ञान के समन्वय का उदाहरण है। नवग्रह वाटिका का लोकार्पण 16 अक्टूबर को कुलपति प्रोफेसर मनुका खन्ना करेंगी।

दरअसल, भारतीय ज्योतिष मान्यता में ग्रहों की संख्या नौ मानी गई है। इन ग्रहों की अपनी अलग-अलग प्रकृति है। इसी वजह से ग्रह मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं। यज्ञ के माध्यम से ग्रह शांति के उपाय में हर ग्रह के लिए अलग विशिष्ट वनस्पति की समिधा (हवन प्रकाष्ठ) प्रयोग की जाती है। इन सबकी जानकारी देने और इन पौधों के धार्मिक महत्व को बताने के उद्देश्य से नवग्रह वाटिका स्थापित की गई है। विद्यार्थी इनके औषधीय गुण भी जानेंगे। विभाग के अनुसार, यह वाटिका न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उपयोगी होगी, बल्कि ज्योतिष विज्ञान व अन्य पाठ्यक्रमों के छात्र-छात्राओं के लिए अध्ययन और अनुसंधान का एक नया केंद्र भी बनेगी। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर गौरी सक्सेना ने बताया कि नवग्रह वाटिका में ग्रहों के अनुसार पौधे लगाए गए हैं। विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. प्रवीण गुप्ता और गार्डन स्टाफ के सहयोग से इसे तैयार किया जा रहा है।

ग्रह और उससे संबंधित पौधे

सूर्य	मदार
चंद्र	पलाश
मंगल	खैर
बुध	अपामार्ग/लटजीरा
बृहस्पति	पीपल
शुक्र	गूलर
शनि	शमी/खेजड़ी
राहु	दूब
केतु	दर्भ/कुश

NBT PAGE NO 4

आनलाइन कोर्सों में 170 प्रवेश, 20 से पढ़ाई

LUCKNOW: लखनऊ विश्वविद्यलय में संचालित आनलाइन आठ पाठ्यक्रमों में इस बार करीब 170 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया. सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के निदेशक प्रोफेसर पियूष भार्गव ने बताया कि जिन विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, उनके अभिलेख सत्यापन की प्रक्रिया चल रही है. 15 अक्टूबर से पहले इनकी सूची यूजीसी की वेबसाइट पर अपलोड की जाएगी. 17 अक्टूबर को दोपहर एक बजे आनलाइन माध्यम से इन विद्यार्थियों का इंडक्शन प्रोग्राम होगा.

AMRIT VICHAR PAGE NO 8

अध्यक्षीय भाषण देती कुलपति प्रो. मनुका खन्ना।

विभाजन भी करती है भाषा

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग व डॉ. राममनोहर लोहिया शोधपीठ के सहयोग से आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन "दक्षिण एशिया में भाषा, संस्कृति और क्षेत्र की अंतर्संबंधता" विषय पर व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एस. के. चौधरी ने की, जबकि संयोजन प्रो. रंगोली चन्द्र ने किया। प्रमुख वक्ताओं में आईआईटी जोधपुर की डॉ. तोनिशा गुडन, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के डॉ. कामेई सैमसन, शिव नादर विश्वविद्यालय के डॉ. पी. सी. सैदलवी और लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद चंद्र, डॉ. तोनिशा गुडन शामिल रहे। मुख्य अतिथि भारतीय समाजशास्त्रीय सोसायटी की सचिव प्रो. श्वेता प्रसाद ने सम्मेलन को शैक्षणिक संवाद की दिशा में सार्थक पहल बताया। अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने सामाजिक विज्ञान में अंतरविषयक संवाद की आवश्यकता पर बल दिया।

छात्रों को किया गया जागरूक

अमृत विचार लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान विभाग में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भावनात्मक संतुलन और मानसिक दृढ़ता पर संवाद को बढ़ावा देना था। विभागाध्यक्ष प्रो. एम. सेराजुद्दीन ने स्वागत भाषण दिया। कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने सहयोगी शैक्षणिक वातावरण की महत्ता बताई। विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. शीला मिश्रा और मनोविज्ञान विभाग की अध्यक्ष प्रो. अर्चना शुक्ला ने मानसिक स्वास्थ्य के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर अपने विचार रखे। फिल्म निर्माता इकबाल रिजवी ने मीडिया में मानसिक स्वास्थ्य के चित्रण पर प्रेरक संबोधन दिया। नर्चरलाइफ की सीईओ फराह सरोश ने आत्म-देखभाल के समन्वित दृष्टिकोण पर चर्चा की।

TOI PAGE NO 3

Prefer regional languages for research: Prof

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: The dominance of global languages like English is now challenged by new forces such as alternative facts and hurt sentiments raising possibilities for revitalizing social science in vernacular languages, said Prof Satish Deshpande from Delhi University at the international conference on 'Intersectionality of language, culture and region in South Asia' held at Lucknow University on Monday.

Prof. Deshpande explained that while English has long dominated higher education and research, this dominance is now being questioned. In a world shaped by emotions, cultural identity and misinformation, he stressed the importance of connecting social science with people in their own languages.